

**ब्लॉक-2**  
**इकाई -2**  
**भारतीय अर्थव्यवस्था और शिक्षा**

संरचना :

- 2.2.1 प्रस्तावना
- 2.2.2 उद्देश्य
- 2.2.3 अर्थव्यवस्था की संकल्पना एवं परिभाषा
- 2.2.4 भारत में शिक्षा तथा आर्थिक विकास का इतिहास
- 2.2.5 आर्थिक व्यवस्था के निर्धारक तत्व
- 2.2.6 आर्थिक व्यवस्था की विशेषताएँ एवं निर्धारक तत्व
- 2.2.7 विभिन्न आर्थिक व्यवस्थाओं में शिक्षा व्यवस्था
  - 2.7.1 कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था एवं शिक्षा
  - 2.2.7.2 वाणिज्य प्रधान आर्थिक व्यवस्था
  - 2.2.7.3 औद्योगिक प्रधान अर्थव्यवस्था एवं शिक्षा
  - 2.2.7.4 सेवा क्षेत्र एवं शिक्षा
- 2.2.8 भूमण्डलीय / वैश्वीकरण का शिक्षा पर प्रभाव
  - 2.2.8.1 वैश्वीकरण के उद्देश्य
  - 2.2.8.2 वैश्वीकरण की विशेषताएँ
  - 2.2.8.3 वैश्वीकरण की आवश्यकता एवं लाभ
  - 2.2.8.4 वैश्वीकरण का शिक्षा पर प्रभाव
- 2.2.9 भारत की शैक्षिक अर्थव्यवस्था में शिक्षा की भूमिका
- 2.2.10 सारांश
- 2.2.11 अभ्यास कार्य
- 2.2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर
- 2.2.13 उपयोगी पुस्तकें

## 2.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ वैसे-वैसे उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती गई। आवश्यकताओं की पूर्ति का मूल आधार है परिवार, समाज और राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था। आर्थिक व्यवस्था ही वह कारक है जो व्यक्ति और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर उन्हें प्रगति के पथ पर अग्रसर करने का अवसर प्रदान करती है।

आज के समय में आर्थिक विकास ही प्रत्येक राष्ट्र की प्राथमिक एवं मौलिक समस्या है। अर्द्ध विकसित राष्ट्र आज के दौर में आर्थिक स्थिति को सुधारने एवं वृद्धि कर जीवन स्तर को ऊपर उठाने में प्रयत्नशील है। जबकि दूसरी ओर विकसित राष्ट्र भी अपने जीवन स्तर तथा राष्ट्रीय आय को और अधिक बढ़ाने में प्रयासरत है जिससे विश्व में अपना प्रभुत्व बनाए रखने में समर्थ रहे।

शिक्षा समाज का अभिन्न अंग है प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक समाज की व्यवस्था एवं संगठन में सहयोग देती रही है। प्राचीन काल से ही भारत कृषि प्रधान देश है। आदिकाल में शिकारी अर्थ-व्यवस्था में मानव शिकार कर अपना जीवन यापन करते थे। अतः इस काल में शिक्षा की व्यवस्था विकसित नहीं थी। उस समय मनुष्य घूमन्त जीवन व्यतीत करता था। कुछ समय पश्चात् घूमन्तू जीवन को त्याग कर स्थायी रूप से रहना शुरू किया तथा कृषि पर निर्भर हो गया। यह देखा गया है कि कृषि प्रधान आर्थिक व्यवस्था से ही शिक्षा का प्रारंभ हुआ। आधुनिक काल में शिक्षा अर्थव्यवस्था का आधार बनी।

शिक्षा के द्वारा सामाजिक विकास होता है क्योंकि शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा ही बालक के अन्तःकरण में निहित प्रकृति प्रदत्त शक्तियों को बाहर निकालती है। अतः शिक्षा की मानव जीवन में महत्व की उस प्रकृति से तुलना कर सकती है जो बीज से वृक्ष बनने तक वातावरण को निर्मित एवं प्रदान करती है जो उसे पूर्णतः विकसित व्यक्तित्व के लिए जरूरी होता है। अतः शिक्षा सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक वातावरण तैयार करती है जिससे राष्ट्रीय विकास होता है।

---

### 2.2.2 उद्देश्य :

---

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- अर्थव्यवस्था को परिभाषित कर सकेंगे।
- अर्थव्यवस्था के निर्धारक तत्व का सारणी बना कर उल्लेख कर सकेंगे।
- विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं में शिक्षा का योगदान की व्याख्या कर सकेंगे।
- वैश्वीकरण का शिक्षा पर प्रभाव के लाभ एवं दोषों की विवेचना कर सकेंगे।
- विभिन्न क्षेत्रों के विकास में शिक्षा का संबंध स्थापित कर सकेंगे।

---

### 2.2.3 अर्थव्यवस्था की संकल्पना एवं परिभाषा :

---

किसी भी समाज अथवा राज्य की शिक्षा उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है और दूसरे शब्दों में कहें किसी भी देश का विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति का आय के साधन ढूंढने या जुटाने में उसका नज़रिया या अधिकार अलग-अलग होता है। कहीं समाज का या कहीं राज्य का और कभी-कभी व्यक्ति और समाज दोनों का। अतः आय के स्रोतों के प्रकार और इन पर व्यक्ति, समाज, राज्य का अधिकार की भिन्नता के कारण से जो व्यवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं उन्हें अर्थव्यवस्था कहा जाता है। अतः समाज भाषा में आय के स्रोतों अथवा उन पर व्यक्ति एवं राज्य के अधिकार की सीमा को अर्थव्यवस्था कहते हैं।

#### परिभाषा –

अर्थव्यवस्था का तात्पर्य है कि शिक्षा के संदर्भ में आर्थिक व्यवस्था से शिक्षा के कार्य के लिए धन का प्रबंध, संग्रह एवं वितरण कराना है।”

---

#### बोध प्रश्न :

---

प्र.1 उपयुक्त उत्तर पर सही का निशान लगाइए –

- (क) आधुनिक काल में शिक्षा के लिए शिकारी अर्थव्यवस्था पर निर्भर रहना पड़ता है।
- (ख) आधुनिक काल में देश को शिक्षा उस देश की आर्थिक स्थिति और अर्थव्यवस्था पर निर्भर करती है।
- (ग) आधुनिक काल में देश की शिक्षा के लिए अर्थव्यवस्था अमीर लोगों के द्वारा होती है।

प्र.2 अर्थव्यवस्था की परिभाषा लिखिए ?

---

---

---

#### 2.2.4 भारत में शिक्षा एवं आर्थिक विकास का इतिहास :

आज औद्योगिक देशों में भौतिक विकास के बावजूद मनुष्य विज्ञिप्त जीवन व्यतीत कर रहा है विकासशील देश अपनी संस्कृति को सही रूप में बनाए रखते हुए आर्थिक प्रगति की ओर अग्रसर है।

वर्तमान विश्वके दो अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाए गए हैं। एक दृष्टिकोण है कि औद्योगिक देशों की तकनीकी विकास हमेशा होता रहेगा और देशों के मध्य असमानता भी रहेगी। परन्तु यह देश असमानता को कम करने हेतु प्रयासरत है। दूसरे दृष्टिकोण में देशों के बीच तकनीकी बढ़त ज्यादा समय तक कायम नहीं रह सकती। जैसे-जैसे तकनीकी विकास होता जाएगा विकासशील देशों के लिए समानता प्राप्त करना आसान हो जाएगा।

स्वतंत्रता के बाद से विकसित देशों के समान भारत में भी शिक्षा को व्यवसायिक रूप दिया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है तथा व्यय भी बढ़ता जा रहा है। परन्तु यह पाया गया कि शैक्षिक प्रगति तथा शिक्षा पर व्यय के अनुपात में राष्ट्र का विकास नहीं हुआ है।

हमारे देश में कुछ राज्यों जैसे केरल में शिक्षितों का प्रतिशत ज्यादा है, किन्तु आर्थिक विकास कम जबकि हरियाणा व पंजाब में शिक्षा का विकास अपेक्षाकृत कम व आर्थिक विकास अधिक हुआ है। विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि शिक्षा के अलावा भी विकास में एक तत्व कार्य करता है। वह शायद नैतिक चरित्र तथा कार्य के प्रति निष्ठ है। दूसरा तथ्य है कि शिक्षा का गुण अर्थात् शिक्षा प्रदान करना व आर्थिक विकास के लिए शिक्षा प्रदान करना अलग-अलग बात है।

आर्थिक विकास किसी अर्थव्यवस्था में आर्थिक वृद्धि की प्रक्रिया को दर्शाता है। इस प्रक्रिया का केन्द्रीय उद्देश्य अर्थव्यवस्था के लिए प्रति व्यक्ति वास्तविक आय का ऊंचा और बढ़ता हुआ स्तर प्राप्त करना होता है।

अतः आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत कोई देश अपने समस्त उत्पादक साधनों का उचित प्रयोग करके राष्ट्रीय आय में लगातार वृद्धि करके प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर वृद्धि करता है। जिससे सामाजिक दशाओं में उन्नति व व्यक्तियों का जीवन-स्तर भी ऊंचा हो जाता है।

भारत एक समय में सोने की चिड़िया कहलाता था। आर्थिक इतिहासकार एंगस मैडिसन के अनुसार पहली सदी से लेकर दसवीं सदी तक भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी।

ब्रिटिश काल में भारत की अर्थव्यवस्था का जमकर शोषण व दोहन हुआ जिसके फलस्वरूप 1947 में भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत क्षीण हो गई। आजादी के बाद भारत में समाजवादी प्रगति रही। बीसवीं शताब्दी में इस प्रणाली का अंत हो गया। (विश्व बैंक की अप्रैल 2014 में जारी रिपोर्ट में)

भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। क्षेत्रफल की दृष्टि में विश्व में सातवें स्थान पर है, जनसंख्या में इसका दूसरा स्थान है। 1991 से भारत में बहुत तेजी से आर्थिक प्रगति हुई है जब से उदारीकरण और आर्थिक सुधार की नीति लागू की गई है और भारत विश्व में महाशक्ति के रूप में सबके समक्ष आया है।

1991 में भारत ने आर्थिक संकट का सामना किया जिसके फलस्वरूप सोना तक गिरवी रखना पड़ा। 1991 के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था में सुदृढ़ता का दौर शुरू हुआ। इसके बाद से प्रतिवर्ष भारत में वृद्धि दर 8 प्रतिशत से अधिक हो गई। 2005-06 और 2007-08 के बीच 9 प्रतिशत विकास दर प्राप्त की। किन्तु वैश्विक मंदी की दौर में 2012-13, 2013-14 में विकास दर 4.6 प्रतिशत पहुंच गई।

---

### बोध प्रश्न

---

प्र.3 आर्थिक विकास का अर्थ बताइए।

---

---

---

---

---

### 2.2.5 शिक्षा एवं आर्थिक विकास के निर्धारक तत्व :

किसी भी देश का आर्थिक विकास तभी संभव है जब उत्पादन शक्ति का विकास हो और यह सभी होगा जब प्राकृतिक साधन, श्रम, पूंजी साहस आदि की वृद्धि हो ।

इस प्रकार आर्थिक विकास के दो प्रमुख तत्व हैं —

1. आर्थिक तत्व
2. सामाजिक तत्व

#### आर्थिक तत्व :

आर्थिक तत्वों में निम्नलिखित तत्व आते हैं —

(1) **जनसंख्या** — जनसंख्या का देश की आर्थिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप उत्पादन के एक साधन श्रम की पूर्ति होती है। परन्तु जनसंख्या वृद्धि का दबाव प्राकृतिक साधनों पर भी पड़ता है तथा देश की सीमित पूंजी, एवं साधन आदि बंट जाते हैं। अर्थात् उनका अनुकूल उपयोग नहीं हो पाता है। विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास की रफ्तार को कम कर देती है क्योंकि इन देशों में पूंजी का अभाव होता है।

(2) **प्राकृतिक साधन** — आर्थिक विकास के लिए मानव साधन (श्रम) जितना आवश्यक है उतना ही प्राकृतिक साधन । परन्तु जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव सीधे प्राकृतिक साधनों पर पड़ता है अर्थात् भोजन, कपड़ा, आवास आदि की कमी होने लगती जिससे जंगलों का काटना, कृषि भूमि का आवासीय भूमि में परिवर्तन, पानी की मिमी का सीधा प्रभाव प्राकृतिक संसाधनों पर ही पड़ता है। इनकी गुण एवं मात्रा पर ही आर्थिक अर्थव्यवस्था आधारित होती है।

(3) **पूंजी** — पूंजी द्वारा ही आर्थिक विकास संभव है । पूंजी व शिक्षा के बिना आर्थिक विकास संभव नहीं है। पूंजी बढ़ाने के लिए निम्न बातों की आवश्यकता होती है—

(a) विनियोग बचत (b) बचत का संग्रह एवं उचित वितरण (b) बचत का संग्रह एवं उचित वितरण (c) बचत का उपयोग उन वस्तुओं के उत्पादन जिसके द्वारा अनुपातन पूंजी में वृद्धि हो सके।

(4) **वैज्ञानिक तथा प्रावधिक प्रगति** — शिक्षा के विकास द्वारा ही वैज्ञानिक एवं प्रावधिक प्रगति संभव है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण व प्रावधिक विकास मिलकर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में सहायक होता है।

(5) **संगठन एवं विशिष्टकरण** — आर्थिक विकास में जितना पूंजी, वैज्ञानिक तथा प्रावधिक प्रगति, प्राकृतिक साधन योगदान देते हैं, उससे अधिक इन संसाधनों के उचित प्रबंधन— श्रम विभाजन, पूंजी नियोजन संसाधनों का उचित उपयोग महत्व रखता है। उदाहरणार्थ संसाधन प्राप्त कर लिए परन्तु उनका उपयोग करना नहीं आता, उपभोग किया परन्तु उत्पादन उस अनुपात में नहीं हुआ, पूंजी की कमी से रॉ मटेरियल समान नहीं

प्राप्त कर पाये आदि। अतः संगठन एवं विशिष्टकरण भी आर्थिक विकास के लिए एक आवश्यक तथा महत्वपूर्ण तत्व है।

## II सामाजिक तत्व

सामाजिक तत्व आर्थिक विकास के लिए ऐसा वातावरण निर्मित करते हैं जिसके द्वारा समाज की उन्नति करने की इच्छा, विकास के लिए तत्पर एवं उत्पादन हेतु नवीन विधियों का उपयोग करते हैं।

---

### बोध प्रश्न

---

प्र.5 आर्थिक विकास के प्रमुख दो तत्व हैं –

प्र.6 पूँजी बढ़ाने के लिए आवश्यक है –

- (अ) जनसंख्या
- (ब) सामाजिक तत्व
- (स) वैज्ञानिक प्रगति
- (द) विनियोग बचत

---

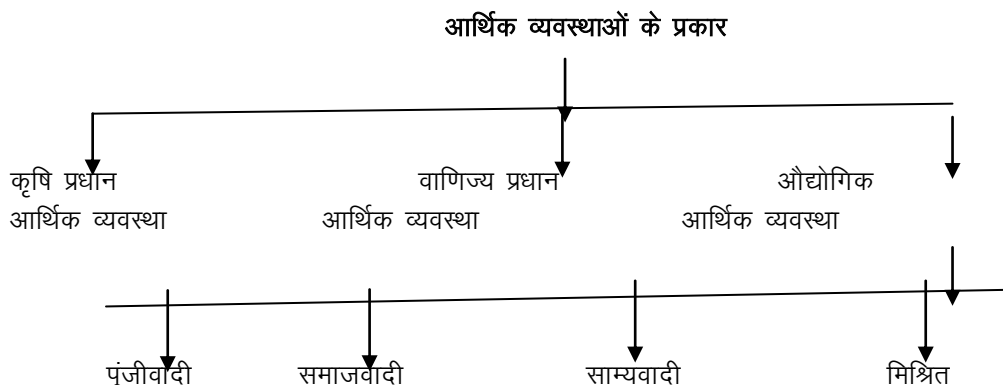
### 2.2.6 व्यवस्थाओं में भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ :

भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- (1) **ग्रामीण अर्थव्यवस्था** — भारत में आज भी 74.3 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती है। जबकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शहरों की जनसंख्या में वृद्धि हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों का मुख्य व्यवसाय कृषि करना एवं कृषि संबंधित कार्य करना है।
- (2) **कृषि की प्रधानता** — भारत कृषि प्रधान देश है। अर्थात् भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर रहती है। कुल भूमि क्षेत्र में से 38.7 प्रतिशत भूमि पर कृषि की जाती है। तथा 70 प्रतिशत कृषि मानसून पर निर्भर करती है। अधिकांश उद्योगों के लिए कच्चा माल कृषि से ही प्राप्त होता है।
- (3) **समाजवादी अर्थव्यवस्था** — स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले भारत में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था थी तथा स्वतंत्रता के बाद समाजवादी अर्थव्यवस्था हो गई। जिसके कारण आर्थिक विषमता एवं एकाधिकार को समाप्त किया जा सका।
- (4) **नियोजित अर्थव्यवस्था** — अन्य समाजवादी राष्ट्रों की तरह भारत ने भी आर्थिक विकास के लिए योजनाबद्ध नियोजन किया। उदाहरण — पंचवर्षीय योजनाओं का नियोजन किया गया।
- (5) **बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार** — अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए भारत में बैंकिंग व्यवस्था सुव्यवस्थित, सुगठित और सुविस्तृत बनाई गयी, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में राष्ट्रीयकृत बैंकों की शाखाएँ एवं सेवाओं का विस्तार किया गया। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की भी स्थापना की गई।
- (6) **सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र का सहभागीता** प्रमुख लक्षण है ।

## 2.2.7 विभिन्न आर्थिक व्यवस्थाओं में शिक्षा व्यवस्था –

आय के विभिन्न स्रोतों की दृष्टि से आर्थिक व्यवस्था के तीन प्रकार होते हैं—



### 2.2.7.1 कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था एवं शिक्षा –

भारत एक कृषि प्रधान देश है 70 प्रतिशत जनता कृषि पर निर्भर रहती है। प्रमुखतया तीन क्रियाओं – फसल उत्पादन, फल उत्पादन तथा पशुपालन को कृषि में सम्मिलित किया जाता है।

आजादी के समय कृषि पिछड़ी अवस्था में थी तथा खेती पुराने तरीकों से की जाती थी। किसान इसी के द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते थे। इसीलिए प्राचीन काल से ही भारत कृषि प्रधान देश कहलाता रहा है। भारत के जीवन और अर्थव्यवस्था में कृषि सर्वोच्च स्थान एवं महत्वपूर्ण है तथा आर्थिक विकास कृषि पर निर्भर करता है। देश में मुद्रा अर्जन, उद्योग-धन्धे, विदेशी व्यापार, आदि सभी कृषि पर निर्भर हैं। कृषि के महत्व व आवश्यकता को बताते हुए स्व. श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था— “कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। यदि कृषि असफल रहती है तो सरकार एवं राष्ट्र दोनों ही असफल रहते हैं।”

अतः कृषि केवल जीविकोपार्जन का साधन ही नहीं बल्कि अर्थव्यवस्था का बनाए रखने में रीढ़ की हड्डी है।

निम्नलिखित क्षेत्रों में शिक्षा की प्रमुख भूमिका रहती है –

- (i) उच्च स्तरीय तकनीकी ज्ञान – ग्रामीणों को शिक्षा के द्वारा ही प्राप्त होता है।
- (ii) सिंचाई विधियों का ज्ञान
- (iii) फसल चक्र का ज्ञान
- (iv) रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग का ज्ञान
- (v) उर्वरकों का निर्माण एवं प्रयोग
- (vi) जलवायु के अनुसार बीजों का निर्माण
- (vii) भूमिगत जल का संरक्षण
- (viii) आर्थिक एवं आवश्यक फसलों का उत्पादन ।

### 2.2.7.2 वाणिज्य प्रधान आर्थिक व्यवस्थाओं में शिक्षा व्यवस्था –

जिस राष्ट्र को जनसंख्या का अधिकतम भाग वाणिज्य अर्थात् क्रय-विक्रय पर निर्भर करता है उस राष्ट्र की अर्थव्यवस्था वाणिज्य प्रधान होती है। उद्योगों में व्यक्ति को खरीद-फरोक्त का लेखा जोखा उत्पादन-खपत का हिसाब, पत्र-व्यवहार, बिक्री कर, आयकर, आदि के नियमों का ज्ञान होना आवश्यक होता है। साथ ही व्यवसाय संबंधी नियमों की जानकारी आवश्यक तथी वह अन्य राज्यों / देशों के साथ व्यवसाय कर एक सफल उद्योगपति बन सकता है। इन सबके लिए उचित शिक्षा की आवश्यकता होती है। इन अर्थव्यवस्था वाले राष्ट्रों में कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाले देशों की तुलना में विशेष प्रकार की उच्च शिक्षा की आवश्यकता होती है। वाणिज्य प्रधान अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से उद्योग प्रधान राष्ट्रों में होती है।

### 2.2.7.3 औद्योगिक आर्थिक व्यवस्था एवं शिक्षा :

जिस राष्ट्र में आय का बड़ा हिस्सा उद्योगों से होता है— उस राष्ट्र की जनसंख्या का अधिकतम भाग उद्योग धंधों (लघु एवं बड़े) पर निर्भर रहा है। वहाँ की अर्थव्यवस्था औद्योगिक अर्थव्यवस्था कहताली है। औद्योगिक अर्थव्यवस्था में प्रमुख चार प्रकार की व्यवस्थाएं पाई जाती है।

- (i) **पूँजीवादी अर्थव्यवस्था** – इस व्यवस्था में देश के सभी व्यक्ति अपनी योग्यता एवं कार्यक्षमता के अनुसार धन कमाता है। इसमें राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति को बचत, धन का उपयोग अधिक लाभ कमाने और आगे बढ़ाने का पूरा अधिकार होता है। इस प्रकार कुछ लोग पूँजीपति और शेष लोग श्रमिकों का जीवन व्यतीत करते हैं। दोनों समाज पूँजीपति एवं श्रमिक वर्ग के बीच बड़ी खाई रहती है। यह सम्पत्ति के असमान वितरण के कारण उत्पन्न होती है। पूँजीपतियों की संताने उच्च शिक्षा प्राप्त करने में समर्थ होते हैं तथा श्रमिक वर्ग की संताने उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाती है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में शिक्षा विशेष वर्ग के लिए ही सीमित रह जाती है।
- (ii) **समाजवादी अर्थव्यवस्था** – इस अर्थव्यवस्था पूँजीवादी अर्थव्यवस्था प्रमुख रूप से उत्पादन पर निर्भर करती है। उत्पादन के सभी संसाधनों पर समाज का पूर्ण अधिकार होता है संचालन, उत्पादन हेतु समाज के व्यक्तियों को उनकी योग्यता एवं कार्य के अनुसार पारिश्रमिक दिया जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति अपनी समाज, राज्य व राष्ट्र की उन्नति के लिए तत्पर रहता है। जो बचत होती है उस पर देश का अधिकार होता है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में अधिकांश लोग उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेते हैं। सभी का शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार होता है।
- (iii) **साम्यवादी अर्थव्यवस्था** – इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में संपूर्ण उद्योगों पर राज्य का नियंत्रण होता है जो इनके लाभों को प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकतानुसार वितरित करता है। यह समाजवादी आर्थिक व्यवस्था का ही एक रूप होता है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में शिक्षा दो प्रकार से दी जाती है।
  - (1) प्रथम – एक से आठ वर्ष तक का पाठ्यक्रम पूरा करना पड़ता है। इसमें गणित एवं विज्ञान की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाता है।



(2) इसके पश्चात् प्रत्येक छात्र को व्यावसायिक पाठ्यक्रम का पूर्ण अध्ययन करना होता है। उसके बाद अयापन कार्य करता है।

(3) इस पाठ्यक्रम में पाठ्यसहगामी क्रियाएँ निहित रहती है।

इस व्यवस्था में उच्च कोटि का व्यवसाय करने हेतु व्यवसाय एवं तकनीकी शिक्षा ग्रहण करता है। यह इस अर्थव्यवस्था का प्रमुख कारण है।

**(iv) मिश्रित अर्थव्यवस्था** — यह व्यवस्था समाजवादी, पूँजीवादी तथा साम्यवादी अर्थव्यवस्था का मिला-जुला रूप है। इसमें उत्पादन क्षेत्र सार्वजनिक और निजी

क्षेत्रों में बंटा होता है। इस व्यवस्था में देश के महत्व के उद्योगों — रेल, इस्पात, सुरक्षा, रसायन इत्यादि पर सरकार का नियन्त्रण रहता है, इसमें शिक्षा का दायित्व राज्य पर रहता है। इस व्यवस्था को — लोक तंत्रीय समाजवाद की संज्ञा दी जाती है।

#### **2.2.7.4 सेवा क्षेत्र एवं शिक्षा का संबंध —**

##### **शिक्षा व आर्थिक विकास का संबंध :**

आर्थिक विकास के लिए मानवीय संसाधनों का बहुत महत्व है। उसी के द्वारा आर्थिक विकास निरन्तर होता रहता है और देश उन्नति करता है। जितना सक्षम व योग्य मानवीय संसाधन होगा उतना ही विकास होना निश्चित है। अतएव उसकी योग्यता, क्षमता, निपुणता, कौशल का विकास करना आवश्यक है। इन शक्तियों का विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव है। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा का आर्थिक विकास से संबद्ध है और एक अभिन्न अंग है। शिक्षा के द्वारा मानव की आंतरिक शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा प्रदान करने में उसमें प्रयोगात्मक एवं व्यवहारिक शिक्षा देने पर बल दिया जाना चाहिए। जितना अधिक मानव में कौशल का विकास होगा उतना ही अधिक उत्पादन क्षमता बढ़ेगी और उत्पादन एवं उपयोगिता व आर्थिक विकास होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा और आर्थिक विकास का घनिष्ठ संबंध है। यदि हम देश का आर्थिक विकास उचित प्रकार से करना चाहते हैं तो विद्यालयों की स्थापना उनका प्रशासन तथा शिक्षा प्रणाली को कारगर, उपयोगी बनाना होगा। शिक्षा के सभी स्तरों पर सुधार करना होगा। शिक्षा का तात्पर्य साक्षर बनाना ही नहीं बल्कि मानव को कौशल विकास हेतु शिक्षा के सभी स्तरों पर अपव्यय व अवरोध को कम करना है एवं शिक्षा व आर्थिक विकास के मध्य की निकट संबंध स्थापित करना आवश्यक है तभी हमारी शिक्षा आर्थिक विकास में अपना पूर्ण योगदान दे सकेगी।

आर्थिक गतिविधियाँ प्राकृतिक संसाधनों के प्रत्यक्ष उपयोग पर आधारित होती हैं इनको क्षेत्रक भी कहते हैं।

क्षेत्रक तीन प्रकार के है —

(1) **प्राथमिक क्षेत्रक** – जब प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं तो इसे प्राथमिक क्षेत्र या कृषि एवं सहायक क्षेत्रक भी कहा जाता है। उदाहरण – कृषि, डेयरी, मत्स्यन और वनों से प्राप्त प्राकृतिक उत्पाद।

(2) **द्वितीय क्षेत्रक** – प्राकृतिक उत्पादों की विनिर्माण प्राणली द्वारा अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है। ये वस्तुएँ सीधे प्रकृति से उत्पादित नहीं होती हैं बल्कि निर्मित किया जाता है। यह प्रक्रिया किसी कारखाने, कार्यशाला या घर में हो सकती हैं। उदाहरण – कपास के पौधे से प्राप्त रेशे का उपयोग कर सूत कातते और कपड़ा बुनते हैं। चूँकि ये क्षेत्रक संबंधित विभिन्न प्रकार के उद्योगों से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है।

(3) **तृतीयक क्षेत्रक** – ये गतिविधियाँ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में मदद करती हैं। ये गतिविधियाँ स्वतः वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती, बल्कि उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग करती हैं। जैसे सूत या बुने कपड़े का थोक एवं खुदरा विक्रेताओं को बेचने के लिए, भण्डारण करने हेतु गोदामों की जरूरत, व्यापार में सहूलियत के लिए दूसरों से वार्तालाप या संवाद या बैंक से कर्ज लेने हेतु सेवाएँ देने की आवश्यकता पड़ती है। तृतीयक क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक भी कहते हैं।

सेवा क्षेत्र कुछ ऐसी सेवाएँ भी सम्मिलित हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं के उत्पादन में सहायता नहीं करती हैं। उपरोक्त सभी के विकास शिक्षा के योगदान के बिना संभव नहीं है। जैसे शिक्षक, डॉक्टर, वकील, नाई, मोची आदि व्यक्तिगत सेवाएँ उपलब्ध कराने वाले और प्रशासनिक एवं लेखाकरण कार्य करने वाले लोगों की आवश्यकता होती है। वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित नवीन सेवाएँ- इंटरनेट कैफे, ए.टी.एम., कॉल सेन्टर, साफ्टवेयर कम्पनी इत्यादि भी सेवाएँ प्रदान करती हैं।

इसे हम निम्न आंकड़ों द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं:-

विकास प्रतिशत में जी.डी.पी.

क्र.	आंकड़ा श्रेणियाँ	1999-2000	2007-08	2012-13	2013-14 (अनमान)
1	प्राथमिक क्षेत्रक (कृषि और सहबद्ध)	23.2	16.8	13.9	13.9
2	द्वितीय क्षेत्रक (उद्योग, खनन, विनिर्माण)	26.8	28.7	27.3	26.1
3	तृतीयक क्षेत्रक सेवाएँ- व्यापार, होटल परिवहन, संचार, वित्त, बीमा आदि	50.0	54.4	58.8	59.9

भारत बहुत से उत्पादों के सबसे बड़े उत्पादकों में से है। इनमें प्राथमिक और विनिर्मित दोनों ही आते हैं।

भारत दूध का सबसे बड़ा उत्पादक है और गेहूँ, चावल, चाय चीनी और मसालों के उत्पादन में अग्रणियों में से एक है। यहाँ लोह, अयस्क, बाक्साईड कोयला और टाईटेनियम के समृद्ध भंडार हैं।

यहाँ उच्च शिक्षा के कारण प्रतिभाशाली मानवशक्ति का सबसे बड़ा पूल है। लगभग 2 करोड़ भारतीय विदेशों में काम कर रहे हैं और वे विश्व अर्थव्यवस्था में योगदान दे रहे हैं। भारत विश्व में सोफ्टवेयर, इंजीनियरों के सबसे बड़े आपूर्ति कर्ताओं में से एक है और सिलिकॉन वैली में यू.एस.ए. में लगभग 30 प्रतिशत उद्यमी पूंजीपति भारतीय मूल के हैं।

अतः स्पष्ट है कि शिक्षा के सुधार का आर्थिक विकास से सीधा संबंध है। (भारतीय अर्थव्यवस्था – भारत झुनझुनवाला)

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार विकास मानव की केवल भौतिक आवश्यकताओं से ही नहीं वरन् उनके जीवन की सामाजिक दशाओं की उन्नति से भी संबंधित होता है। विकास का आशय केवल आर्थिक वृद्धि ही नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थात्मक तथा आर्थिक परिवर्तन भी शामिल हैं।

---

### बोध प्रश्न

---

प्र.7 आर्थिक व्यवस्थाओं की कितने प्रकार हैं ?

- (अ.) दो
- (ब.) चार
- (स.) तीन
- (द.) शून्य

प्र.8 भारत की अर्थव्यवस्था है –

- (अ.) मिश्रित
  - (ब.) पूंजीवादी
  - (स.) समाजवादी
  - (द.) साम्यवादी
- 

### 2.2.8 भूमण्डलीयकरण का शिक्षा का प्रभाव :

इस अंग्रेजी में ग्लोबलाइजेशन कहते हैं। संसार के सभी देश एक दूसरे के विकास एवं समस्याओं के समाधान के लिए एक जुट रहते हैं। सार्क शिखर सम्मेलन UNESCO, UNICEF, WHO आदि संगठन वैश्वीकरण / भूमण्डलीयकरण के उदाहरण हैं।

भूमण्डलीयकरण / वैश्वीकरण की मनस्वी के अनुसार परिभाषा इस प्रकार है—

उदारीकरण, आर्थिक विकास एवं निजीकरण के सामंजस्य की विश्वस्तरीय प्रक्रिया को वैश्वीकरण कहते हैं। सामान्य शब्दों में भूमण्डलीयकरण का अर्थ है सम्पूर्ण विश्व का एकजुट हो जाना।

यातायात व्यवस्था एवं क्रान्तीकारी सूचना प्रौद्योगिकी, व्यापार, उत्पादन, उच्च गुणवत्ता, रोजगार आदि में वृद्धि आदि तत्वों के कारण ही भूमण्डलीकरण संभव हुए हैं। इससे केवल व्यावसायीकरण को बढ़ावा मिला बल्कि विभिन्न संस्कृतियाँ भी एक-दूसरे के समीप आ गई हैं। सम्पूर्ण विश्व एक परिवार लगता है।

#### 2.2.8.1 वैश्वीकरण के उद्देश्य :

**भूमण्डलीकरण /वैश्वीकरण के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—**

- (1) भूमण्डलीकरण का मुख्य उद्देश्य आर्थिक रूप से पिछड़े देशों को आर्थिक मदद कर विकासशील देश में परिवर्तित करना तथा विश्व की नवीन संरचना विकसित करना।
- (2) आर्थिक रूप से कमजोर देशों को आर्थिक सहायता प्रदान कर गरीबी दूर करना। उदाहरणार्थ विश्व बैंक द्वारा अनुदान प्रदान करना।
- (3) विश्व में शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक सुधार उदारीकरण द्वारा सम्भव हो रहा है। इसके द्वारा देशवासियों के जीवन स्तर में तीव्र और सतत् सुधार लाया जा सकता है।
- (4) सार्वजनिक उपक्रमों की कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए पूर्णरूप से या आंशिक रूप से स्वामित्व या पूंजी निजी व्यक्तियों को बेच (निजीकरण) दिया जाता है। निजीकरण और विनिवेश अलग-अलग अवधारणाएँ नहीं हैं परन्तु एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। निजीकरण द्वारा आर्थिक संसाधनों एवं व्यवस्था में सरकार की भागीदारी कम करना और निजी क्षेत्रों को बढ़ावा देना प्रमुख उद्देश्य है।
- (5) भूमण्डलीकरण का उद्देश्य देशों में सरकारी नियंत्रण उद्योगों की सुरक्षा एवं अर्थव्यवस्था, संगठनों का संरक्षण करना आदि तक समित करना है।
- (6) भूमण्डलीकरण का उद्देश्य विभिन्न देशों के मध्य विश्व बंधुत्व की भावना का विकास करना है।
- (7) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना का विकास करना जिसके द्वारा देशों के मध्य आपसी संबंधों में सुधार हो सके। उदाहरण (ए) एक देश के विमान दूसरे देश की सीमा से होकर जा सकना। (बी) गैस पाइप लाइन को अपने क्षेत्र से होकर जाने की अनुमति प्रदान करना।

#### 2.2.8.2 भूमण्डलीकरण की विशेषताएँ—

भूमण्डलीकरण के तत्वों पर दृष्टिपात करने पर इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं :-

- (1) सहयोग व सद्भावना — विपरीत परिस्थितियों में किसी भी राष्ट्र में भूकम्प, बाढ़, सुनामी आदि आपातकालीन स्थितियों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक-दूसरे की सहायता सहयोग की भावना दर्शाती है।
- (2) सरकारी हस्तक्षेप — भूमण्डलीकरण व्यवस्था में अधिक सरकारी हस्तक्षेप के बजाय आत्मनुशासन द्वारा नियन्त्रण होना चाहिए। अतः सरकारी नियन्त्रण सामान्य होना चाहिए।
- (3) समस्या समाधान एवं मानवता का विकास।

- (4) तकनीकी शिक्षा का विकास – भूमण्डलीयकरण की प्रमुख विशेषता है कि इसमें तकनीकी शिक्षा का तीव्र विकास होता है। इस देश दूसरे देश को तकनीकी का आदान-प्रदान भी करते हैं।
- (5) सूचना तकनीकी का विकास – आज घर पर बैठे ही सूचना देश के हर कौने में भेज सकते हैं और वहाँ की सूचना प्राप्त कर सकते हैं। यह भी भूमण्डलीयकरण का ही उदाहरण है।
- (6) विचारधाराओं का एक मंच पर सुना जाना तथा आवश्यकतानुसार उन्हें महत्व प्रदान करना एक विशेषता है।
- (7) किसी भी देश की समस्या उसी देश की न मानकर सभी देश उसे अपनी समस्या मानते हैं जैसे—आतंकवाद की समस्या।

#### 2.2.8.3 वैश्वीकरण / भूमण्डलीकरण के लाभ :

भूमण्डलीकरण द्वारा संतुलित पर्यावरण का विकास, भयमुक्त समाज का विकास, युद्ध की समाप्ति एवं अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास सम्भव है।

#### 2.2.8.4 भूमण्डलीकरण का शिक्षा पर प्रभाव –

एक तरफ जहाँ शिक्षा भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है वहीं दूसरी तरफ शिक्षा प्रणाली को प्रभावित करता है।

- (1) वर्तमान समय में प्रत्येक राष्ट्र यह चाहता है कि उसके बच्चे शिक्षित होकर अच्छा नागरिक, समझदार व जागरूक बने। कहने का अर्थ है कि बच्चों को शिक्षा के लिए सभी सुविधाएँ एवं विकास के अवसर प्रदान हों, जिससे वह स्वस्थ व आनन्दमयी जीवन यापन करें। विश्व बैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को तथा यूनीसेफ आदि संस्थाएँ विश्व में बच्चों को रोगमुक्त बचपन की सुरक्षा और संरक्षण हेतु कार्यें एवं योजनाओं का संचालन करते हैं। यह सभी भूमण्डलीकरण के कारण सम्भव हुआ है।
- (2) वैश्विक शांति स्थापना के लिए शिक्षा को विश्व के समस्त देशों, प्राथमिक स्तर से ही आदर्शों, मूल्यों, संस्कृति संरक्षण हेतु सम्मिलित करना होगा। इसके लिये गणित व विज्ञान विषय को पाठ्यक्रम में इस प्रकार निर्धारित किया जाना चाहिए जिससे समाज के प्रत्येक व्यक्ति वास्तविक रूप से शान्ति सम्पन्न, सहयोगवादी अहिंसावादी एवं आदर्शवादी –समाज की स्थापना करने में सहायक हों।
- (3) शिक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व की गतिविधियों से अवगत होना भूमण्डलीकरण के कारण सम्भव हो पाया है। अतः भूमण्डलीकरण ने ज्ञान की सीमाओं का विस्तार किया है।
- (4) भूमण्डलीकरण के कारण सर्वजन हिताय की विचाराधा का जन्म हुआ है। जिससे सभी देशों को एक-दूसरे के लिए आर्थिक सामाजिक सहयोग की भावना विकसित हुई। अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास हुआ है।
- (5) इसके माध्यम से विकसशील देशों के नपागरिकों के जीवन-स्तर में सुधार सम्भव हुआ है।

(6) देश के बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा सम्भव हो पायी है। जिसके प्रभाव से मानव तस्करी, बालश्रम जैसे प्रवृत्तियों को गंभीर अपराध घोषित किया गा है।

(7) मानव अपने स्वार्थ के कारण प्रकृति से छेड़-छाड़ करता रहता है जिसके फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण की सम्भावना बढ़ती जाती है। इस हेतु विश्व पर्यावरण संतुलित करने के लिए सभी प्रयासरत रहे हैं तभी आज बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों में कमी आयी है। भूमण्डलीकरण के कारण शिक्षा पर पड़ने वाले उपरोक्त प्रभावों के अलावा कुछ नकारात्मक प्रभाव भी है—

- (i) शक्ति का केन्द्रीकरण
- (ii) विकसित देशों का एकाधिकार
- (iii) अविकसित देशों की उपेक्षा
- (iv) समानता के दृष्टिकोण का अभाव
- (v) तानाशाही, निर्भरता व लोकशाही का दुरुपयोग आदि ।

---

### बोध प्रश्न

---

प्र.9 भूमण्डलीकरण / वैश्वीकरण का अर्थ है —

- (अ) ग्लोबलाइजेशन
- (ब) व्यावसायीकरण
- (स) सम्पूर्ण विश्व का एकजुट होना।
- (द) सूचना प्रौद्योगिकी का विकास

---

### 2.2.9 सारांश —

किसी समाज, राज्य तथा देश की शिक्षा उसकी आर्थिक स्थिति और अर्थव्यवस्था पर निर्भर करती है।

शिक्षा के संदर्भ में अर्थव्यवस्था से तात्पर्य है कि शिक्षा के लिए धन का प्रबन्ध, संग्रह और वितरण करने से है।

अर्थव्यवस्था एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत कोई देश अपने सभी उत्पादक साधनों का सही / उचित उपयोग करके, राष्ट्रीय आय में निरन्तर वृद्धि करके, प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि करता है। समाज व व्यक्ति का जीवन स्तर भी ऊँचा हो जाता है। आर्थिक विकास के तत्वों को दो भागों में बाँट सकते हैं—

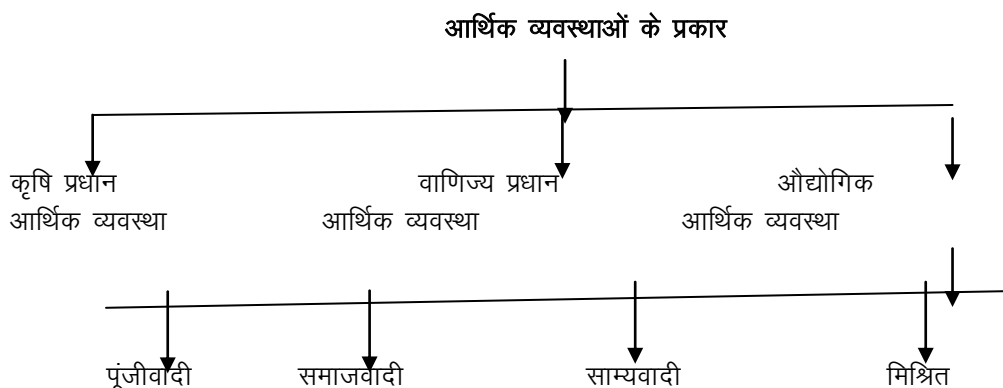
- (अ) आर्थिक तत्व —
  - (i) जनसंख्या (ii) प्राकृतिक साधन (iii) पूँजी
  - (iv) वैज्ञानिक और प्राविधिक प्रगति
  - (v) पूँजी का उत्पादन एवं अनुपात

(vi) संगठन और व्यवस्था

(ब) सामाजिक तत्व – सामाजिक वातावरण प्रमुख हैं –

विभिन्न आर्थिक व्यवस्थाओं में शिक्षा व्यवस्था –

इसे निम्न चार्ट द्वारा दर्शाया जा सकता है–



**भूमण्डलीकरण की परिभाषा** – प्रो. के. मनस्वी के अनुसार उदारीकरण, आर्थिक विकास एवं निजीकरण के सामंजस्य की विश्वस्तरीय प्रक्रिया को भूमण्डलीकरण/ वैश्वीकरण कहते हैं।

#### 2.2.10 अभ्यास कार्य :

प्र.1 भूमण्डलीकरण के उद्देश्य

प्र.2 भूमण्डलीकरण के शिक्षा पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव लिखिए।

#### 2.2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर :

प्र.1 (ख)

प्र.2 अर्थव्यवस्था का तात्पर्य है शिक्षा के संदर्भ में आर्थिक व्यवस्था से शिक्षा के कार्य के लिए धन का प्रबंध, संग्रह एवं वितरण करना है।

प्र.3 आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत कोई देश अपने समस्त उत्पादक साधनों का उचित प्रयोग करके राष्ट्रीय आय में लगातार वृद्धि करके प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर वृद्धि करता है।

प्र.4 आर्थिक विकास ।

प्र.5 (अ) आर्थिक तत्व

(ब) सामाजिक तत्व

प्र.6 विनियोग बचत

प्र.7 (स) तीन

प्र.8 (अ)

प्र.9 (स)

#### 2.2.12 उपयोगी पुस्तकें :